सारंगी

2

हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक

QRickit

0222

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी

NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Reprint 2025-26

© NCERT not to be republished

0222 – सारंगी
कक्षा 2 के लिए हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-438-7

प्रथम संस्करण
जून 2023 जयेष्ठ 1945

पुनर्मुद्रण
मार्च 2024 चैत्र 1946
फरवरी 2025 फाल्गुन 1946

PD 300T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2023

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग , नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पानीहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम.वी. श्रीनिवासन*
मुख्य संपादक	:	*बिज्ञान सुतार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	*जहान लाल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अमिताभ कुमार*
संपादन सहायक	:	*ऋषिपाल सिंह*
उत्पादन अधिकारी	:	*सुनील शर्मा*

आवरण, चित्रांकन एवं लेआउट
ग्रीन ट्री डिजाइनिंग स्टूडियो प्रा. लि.

© NCERT not to be republished

आमुख

भारत में बच्चों के सबसे प्रारंभिक वर्षों में उनके सर्वांगीण विकास को पोषित करने की एक समृद्ध परंपरा रही है। ये परंपराएँ परिवार, रिश्तेदार, समुदाय, समाज एवं देखभाल व सीखने के औपचारिक संस्थानों के लिए पूरक की भूमिका निभाती हैं। बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्षों में, पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित संस्कारों के विकास को समाहित करते इस समग्र दृष्टिकोण का उनके विकास, स्वास्थ्य, व्यवहार और उत्तरवर्ती वर्षों में संज्ञानात्मक क्षमताओं के प्रत्येक पक्ष पर आजीवन एक महत्वपूर्ण व सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

बच्चों के जीवनपर्यंत विकास में प्रारंभिक वर्षों के महत्व को ध्यान में रखते हुए, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* (एन.ई.पी. 2020) ने 5 + 3 + 3 + 4 पाठ्यचर्या एवं शिक्षाशास्त्रीय संरचना की परिकल्पना की है जो पहले पाँच वर्षों (3–8 आयु वर्ग) पर समुचित ध्यान देती है, जिसे आधारभूत स्तर की संज्ञा दी गई है। कक्षा 1 व 2 भी आधारभूत स्तर का एक अभिन्न अंग हैं। तीन से छह वर्ष के बच्चों के समग्र विकास की आधारशिला के प्रथम चरण 'बालवाटिका' से आगे बढ़ते हुए व्यक्ति का आजीवन सीखना, सामाजिक एवं भावनात्मक व्यवहार और समग्र स्वास्थ्य इसी महत्वपूर्ण आधारभूत स्तर के अंतराल में प्राप्त अनुभवों पर निर्भर करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस स्तर के लिए एक विशिष्ट राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की संस्तुति करती है, जो न केवल आधारभूत स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में, अपितु विद्यालयी शिक्षा के अगले चरणों में इसकी गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अंतर्गत उल्लिखित सिद्धांतों और उद्देश्यों, तंत्रिका विज्ञान एवं प्रारंभिक बाल्यकाल शिक्षा सहित विभिन्न विषयों के अनुसंधान, व्यावहारिक अनुभव व संचरित ज्ञान तथा राष्ट्र की आकांक्षाओं व लक्ष्यों के आधार पर, आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) का विकास किया गया जिसका विमोचन 20 अक्तूबर 2022 को किया गया था। तत्पश्चात एन.सी.एफ.-एफ.एस. के पाठ्यचर्या संबंधी उपागम के अनुरूप पाठ्यपुस्तकों की संरचना की गई। ये पाठ्यपुस्तकें कक्षा में सीखने और परिवार तथा समुदाय में सार्थक अधिगम-संसाधनों के साथ सीखने को महत्व देते हुए बच्चों के व्यावहारिक जीवन से जुड़ने का प्रयास करती हैं।

आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा *तैत्तिरीय उपनिषद्* में वर्णित 'पंचकोश विकास' (मानव व्यक्तित्व के पाँच कोशों का विकास) की आधारभूत अवधारणा से संबद्ध है। एन.सी.एफ.-एफ.एस. सीखने के पाँच आयामों, जैसे— शारीरिक एवं गत्यात्मक, समाज-संवेगात्मक, भाषा एवं साक्षरता,

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

संस्कृति तथा सौंदर्यबोध को पंचकोश की भारतीय परंपरा के साथ जोड़ती है। ये पाँच कोश इस प्रकार से हैं— अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश। इसके अतिरिक्त, यह घर पर अर्जित बच्चों के अनुभवजन्य ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को एकीकृत करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है जिन्हें विद्यालय परिसर में विकसित किया जाएगा।

आधारभूत स्तर की पाठ्यचर्या, जिसमें कक्षा 1 और 2 भी समाहित हैं, सीखने के खेल आधारित उपागम को समुचित रूप से व्याख्यायित करती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार पाठ्यपुस्तकें सीखने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंश हैं, तथापि यह समझना भी आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तकें अनेक शिक्षाशास्त्रीय उपकरणों एवं पद्धतियों, जिनमें गतिविधियाँ, खिलौने, बातचीत आदि भी समाहित हैं, में से केवल एक उपकरण है। यह पुस्तकों से सीखने की प्रचलित प्रणाली से अधिक सुखद खेल आधारित एवं दक्षता आधारित अधिगम प्रणाली की ओर उन्मुख करती है जहाँ बच्चे का किसी कार्य को स्वयं करते हुए सीखना महत्वपूर्ण हो जाता है। अत: यह पाठ्यपुस्तक जो आपके हाथ में है, इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए खेल आधारित शिक्षाशास्त्रीय उपागम को प्रोत्साहित करने वाले एक उपकरण के रूप में देखी जानी चाहिए।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक दक्षता आधारित सामग्री को सरल, रोचक और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। इस पाठ्यपुस्तक को समावेशी एवं प्रगतिशील बनाने के लिए पाठों और चित्रों की प्रस्तुति के माध्यम से अनेक रूढ़ियों को तोड़ा गया है। परंपरा, संस्कृति, भाषा-प्रयोग तथा भारतीयता समेत स्थानीय संदर्भों की बच्चों के सर्वांगीण विकास में महती भूमिका इस पुस्तक में परिलक्षित होती है। इस पाठ्यपुस्तक को बच्चों के लिए आकर्षक एवं आनंददायी बनाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक में कला और शिल्प का बेजोड़ संयोजन है जिससे बच्चे गतिविधियों में अंतर्निहित सौंदर्यबोध की सराहना कर सकते हैं। यह पाठ्यपुस्तक बच्चों को स्वयं से संबंधित अवधारणाओं को अपने संदर्भों में समझने की स्थितिजन्य जागरूकता प्रदान करती है। यद्यपि इनमें विषय-वस्तु का बोझ कम है, तथापि ये पाठ्यपुस्तकें सारगर्भित हैं। इस पाठ्यपुस्तक में खिलौनों और खेलों के माध्यम से सीखने की अलग-अलग युक्तियों के साथ-साथ अन्य गतिविधियाँ और प्रश्न, जो बच्चों में तार्किक चिंतन और समस्या को सुलझाने की योग्यता विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं, को भी सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त, पाठ्यपुस्तकों में ऐसी पर्याप्त विषय सामग्री और गतिविधियाँ भी हैं जो बच्चों में पर्यावरण के प्रति आवश्यक संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक हैं। साथ ही ये पाठ्यपुस्तकें हमारे राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों के अनुरूप उनके द्वारा विकसित किए जाने वाले संस्करणों में स्थानीय परिदृश्य के साथ-साथ अन्य तत्वों के समायोजन/अनुकूलन की संभावना भी उपलब्ध कराती हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, इस पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री विकसित करने के लिए गठित समिति द्वारा किए गए कठोर परिश्रम की सराहना करती है। मैं समिति की अध्यक्षा प्रो. शशि कला वंजारी तथा अन्य सभी सदस्यों को समय पर और इतने उत्कृष्ट रूप

Reprint 2025-26

से इस कार्य को संपन्न करने के लिए साधुवाद देता हूँ। मैं उन सभी संस्थानों और संगठनों का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य को संभव बनाने में उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की है। मैं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति के अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरीरंगन व इसके सदस्यों तथा मैंडेट समूह के अध्यक्ष प्रो. मंजुल भार्गव व अन्य सदस्यों के साथ ही समीक्षा समिति के सदस्यों को भी उनके समयोचित मार्गदर्शन एवं मूल्यवान सुझावों के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ।

एक संस्था के रूप में भारत की विद्यालयी शिक्षा में सुधार और इसके लिए विकसित अधिगम तथा शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता को निरंतर समुन्नत करने के लिए प्रतिबद्ध राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इन पाठ्यपुस्तकों को और अधिक परिष्कृत करने के लिए अपने समस्त हितधारकों से महत्वपूर्ण टिप्पणियों और सुझावों की अपेक्षा करती है।

प्रोफेसर दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

27 जनवरी 2023
नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक के बारे में

प्रिय शिक्षक साथियो,

यह प्रसन्नता का विषय है कि कक्षा 2 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक *सारंगी* भाग 2 आपके हाथ में है। *सारंगी* भाग 2 का निर्माण करते हुए मुख्य रूप से *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखा गया है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के आलोक में विकसित *बुनियादी स्तर* की पाठ्यचर्या की अनुशंसाओं को भी इस पाठ्यपुस्तक में समाहित किया गया है। आशा है कि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की अनुशंसाओं के अनुसार यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने तथा न्यायपूर्ण समाज को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस नीति में बच्चों की शिक्षा में भाषा और साक्षरता विकास को बहुत महत्व दिया गया है। माना जाता है कि भाषा और साक्षरता की ठोस नींव अन्य विषयों को भी दक्षतापूर्वक सीखने में सहायक होती है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बुनियादी स्तर* (फाउंडेशनल स्टेज) पर बच्चों में भाषा के विकास के साथ-साथ सतत सीखने की कला, समस्या-समाधान, तार्किक और रचनात्मक चिंतन के विकास पर भी बहुत बल देती है। इस स्तर पर भाषा के साथ-साथ अन्य विषयों और गतिविधियों में भारतीय परंपरा, सांस्कृतिक मूल्य, राष्ट्रप्रेम, चरित्र-निर्माण, नैतिकता, करुणा, जेंडर संवेदनशीलता और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को भी समेकित रूप में सम्मिलित करने की अनुशंसा करती है।

आप जानते हैं कि शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक केवल एक माध्यम है, बच्चों में उन अनंत क्षमताओं को विकसित करने का, जिनके बीज उनमें पहले से ही विद्यमान हैं। आप सभी से यह आग्रह है कि पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते हुए और स्वतंत्र रूप से भी बच्चों को कक्षा-कक्ष के इर्द-गिर्द फैली अनंत प्रकृति से अवगत कराएँ, उन्हें खुद खोज-बीन करके सीखने के लिए प्रोत्साहित करें, उन्हें अपनी बात कहने के अवसर दें, सही-गलत का निर्णय न लेते हुए बच्चों के साथ एक संवाद में शामिल हों।

कक्षा 2 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते समय निम्न बातों का ध्यान रखा गया है—

1. पढ़ने-लिखने की शुरुआत के लिए बच्चों के जीवन से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है जिससे यह प्रक्रिया सहज और अर्थपूर्ण हो।

2. भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि जितना अधिक भाषा का प्रयोग विभिन्न कार्यों के लिए होता है, उतनी ही तेज़ी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अत: इस पुस्तक में बातचीत करने, सुनकर कुछ करने, कहानी और कविताओं का आनंद लेने, नए शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर अलग-अलग संदर्भों में और बार-बार दिए गए हैं।

© NCERT not to be republished

3. इस पुस्तक में पाँच ऐसे संदर्भों को चुना गया है जो बच्चों के जीवन से जुड़े हैं— परिवार, रंग ही रंग, हरी-भरी धरती, मित्रता और आकाश।

4. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कक्षा में बच्चों के संदर्भों की वस्तुओं / घटनाओं / व्यक्तियों के साथ इस पुस्तक में दी गई पठन सामग्री को जोड़ा जाए। इस हेतु सुझाव भी दिए गए हैं।

5. प्रत्येक पाठ में लगभग सभी दक्षताओं का ध्यान रखा गया है। बच्चों के दृष्टिकोण से पाठों को रोचक बनाने के लिए कार्यों में विविधता लाने का प्रयास किया गया है। मुख्यत: पाठ्यचर्या के लक्ष्य एवं दक्षताओं को ध्यान में रखते हुए इन पाठों का चुनाव एवं सृजन किया गया है।

बुनियादी स्तर (फाउंडेशनल स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2022) के अनुसार भाषा सीखने-सिखाने के लिए भाषा-शिक्षण के चारों स्तंभों पर कार्य करना महत्वपूर्ण है। ये चार स्तंभ हैं— मौखिक भाषा का विकास, शब्द पहचान, पढ़ना और लिखना।

मौखिक भाषा का विकास— बेहतर ढंग से सुनकर समझना, मौखिक शब्दावली का विकास और साथियों व जानकार अन्य लोगों (जैसे — बड़े विद्यार्थी, शिक्षक, माता-पिता) के साथ बातचीत और चर्चा का उपयोग सीखने के लिए करना।

शब्द पहचान— इसमें प्रिंट जागरूकता और ध्वनि जागरूकता, प्रतीकों और ध्वनि का संबंध, लिखित शब्द पहचानना और शब्दों को लिखना शामिल है।

पढ़ना— लिखित सामग्री से अर्थ का निर्माण करना और इसके विषय में आलोचनात्मक/ समीक्षात्मक ढंग से चिंतन करना।

लिखना— तार्किक और व्यवस्थित तरीके से विचारों या सूचनाओं की प्रस्तुति के साथ-साथ शब्दों को सही ढंग से लिखने की क्षमता।

इस पुस्तक में प्रत्येक विषय के इर्द-गिर्द चुनी गई पठन सामग्री में इन चार स्तंभों को निम्न प्रकार से बाँटा गया है—

मौखिक भाषा का विकास

पुस्तक में अलग-अलग भाग हैं, जैसे— 'चित्र और बातचीत', 'कविता', 'आओ कुछ बनाएँ', 'खेल-खेल में' और 'खोजें-जानें'। इन सभी का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में मौखिक भाषा का विकास करना है। इसके साथ-साथ बच्चे मिलकर कुछ बनाते समय एक-दूसरे के विचारों को सुनेंगे, खोजें-जानें क्रियाकलापों के दौरान अपने परिवार एवं समुदाय के लोगों के साथ बातचीत कर कुछ समझने का प्रयास करेंगे आदि। उदाहरण के लिए, 'परिवार' (इकाई 1) के चित्र को देखकर बच्चे आपस में अपने-अपने अनुभवों को साझा करेंगे, अनुमान लगाएँगे, तर्क करेंगे आदि।

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

मौखिक भाषा के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम है, बच्चों को बिना किसी अवरोध के बोलने के अवसर प्रदान करना। इसके लिए भाषा शिक्षण के दौरान आवश्यक है कि हम बच्चों की भाषा और उनके पूर्व अनुभव को स्वीकार करें और उन्हें अपनी बात अपनी भाषा में कहने के लिए प्रोत्साहित करें। बातचीत के अंतर्गत दी गई गतिविधियों का एक और महत्वपूर्ण पहलू है, बहुभाषिकता। अर्थपूर्ण सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में आवश्यक है कि बच्चे अपनी भाषा में खुलकर अपने विचार रख सकें तथा अपनी भाषा का प्रयोग करते हुए ही लक्षित भाषा को सीखें। कक्षा की हर गतिविधि में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है।

शब्दों को पहचानना एवं गढ़ना

कक्षा 1 में बच्चों ने अक्षर और ध्वनि का अंतर-संबंध समझते हुए शब्दों को गढ़ना सीख लिया है। ऐसा हो सकता है कि कुछ बच्चों को कुछ अक्षर पहचानने में कठिनाई हो। इस स्थिति में कक्षा 2 में दिए गए पाठों से सरल शब्दों से पहली, दूसरी, अंतिम ध्वनि का अभ्यास करवाया जा सकता है। इसी के साथ शब्द-पहेलियाँ भी दी जाएँ, तो बच्चों को सीखने में आनंद आएगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रथम इकाई 'परिवार' में इन दोनों अभ्यासों को सम्मिलित किया गया है। कक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ऐसे और कार्य नियमित रूप से करवाए जा सकते हैं। कक्षा 2 में संयुक्ताक्षर जैसे कि 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' और 'श्र' पर भी कुछ अभ्यास दिए गए हैं। साथ ही साथ अनुस्वार, चंद्रबिंदु वाले शब्दों को भी सम्मिलित किया गया है।

पढ़ना

'सुनें कहानी', 'मिलकर पढ़िए' और 'कविता' आदि भागों में बच्चों को पढ़ने की विविध दक्षताओं को विकसित करने के अवसर हैं, जैसे— मिलकर पढ़ते समय बच्चे शिक्षक के साथ मिलकर और बाद में अपने मित्रों के साथ मिलकर पढ़ेंगे। पढ़ते समय कहानी के चित्रों को देखकर अनुमान लगाना, फिर कहानी सुनकर बातचीत करना, शब्दों को चित्र रूप में समझना, कुछ प्रश्नों के उत्तर देना आदि से बच्चे 'पढ़ना माने अर्थ गढ़ना' संकल्पना को आत्मसात कर पाएँगे। उदाहरण के लिए, 'माला की चाँदी की पायल' पाठ में प्रश्न दिया गया है कि 'पायल उतारने के अतिरिक्त माला और क्या कर सकती थी?' इस प्रश्न का उत्तर सोचते हुए बच्चे पाठ पढ़ने के साथ अपना अर्थ भी गढ़ सकते हैं।

लिखना

हम सभी जानते हैं कि लिखने की शुरुआत चित्रों से होती है और फिर चित्रों के साथ बच्चे शब्द और धीरे-धीरे वाक्य लिखना आरंभ करते हैं। यहाँ प्रयास किया गया है कि बच्चे अपने अनुभवों और विचारों को चित्रों के माध्यम से बताएँ और फिर उन पर कुछ शब्द शिक्षक की सहायता से लिखें। अन्य भाग, जैसे— 'कविता', 'सुनें कहानी' और 'मिलकर पढ़िए' आदि में भी लिखने के अवसर हैं— यहाँ लिपि को समझने और लिखने पर भी बल दिया गया है।

© NCERT not to be republished

बच्चों में इन सभी दक्षताओं के विकास के लिए यह आवश्यक है कि इन चारों स्तंभों पर नियमित रूप से कार्य हो। अत: इस पाठ्यपुस्तक में पाँच संदर्भों के इर्द-गिर्द पढ़ने, लिखने, शब्द पहचानने और बातचीत के विविध आयामों को सम्मिलित किया गया है। आइए, इन आयामों के बारे में सविस्तार चर्चा करें।

सृजनशील शिक्षक दी गई पठन-पाठन सामग्री को अत्यंत रोचक और प्रभावी तरीके से बच्चों के साथ मिलकर रच सकते हैं। यहाँ बस कुछ सुझाव हैं। हमें आशा है कि आप अपनी कक्षा में विविधता लाएँगे, बच्चों के संदर्भों के आधार पर शब्दों का खेल, खेल गीत, कविताएँ और कहानियाँ शामिल करेंगे। विविध संसाधनों की सहायता से कक्षा को और भी रोचक बनाएँगे।

बातचीत

इस पुस्तक में लिए गए पाँचों संदर्भों में बातचीत की ढेर सारी संभावनाएँ हैं। उदाहरण के लिए 'रंग-ही -रंग' में आप बच्चों से नीचे दिए गए प्रश्नों से बातचीत शुरू कर सकते हैं— (जैसे-जैसे बच्चों के उत्तर आएँगे, उस तरह से बातचीत को आगे बढ़ाया जा सकता है।)

आपका सबसे मनपसंद रंग कौन-सा है? क्यों? 'नीले' रंग का नाम सुनने पर आपको किन-किन वस्तुओं के नाम याद आते हैं? हमारे इर्द-गिर्द कौन-कौन से रंग हैं? अगर सारे रंग गायब हो जाएँ तो कैसा लगेगा? अगर केवल एक ही रंग हो तो दुनिया कैसी होगी?

बातचीत की यह गतिविधि हर दिन करवाई जा सकती है। एक दिन में सभी बच्चों को अवसर नहीं मिल पाएगा, अतः प्रतिदिन यह गतिविधि कक्षा में करवाएँ। समय-सारिणी में समूह समय (वृत्त समय) के लिए जगह है। उस समय इस तरह की बातचीत को जगह दी जा सकती है।

सुनें कहानी

इसके अंतर्गत दी गई कहानियों को शिक्षक बच्चों को एक से अधिक बार पढ़कर सुनाएँ। कुछ तरीके इस प्रकार हो सकते हैं—

कहानी पढ़कर सुनाने से पूर्व बच्चों से कहानी के चित्र देखकर कहानी गढ़ने को कहिए। यह कार्य आप बच्चों के छोटे समूह बनाकर करवा सकते हैं। कहानी पढ़ते समय एक या दो प्रश्न बीच में बच्चों से पूछें, जैसे 'आपको क्या लगता है कि कहानी में आगे क्या होगा?' आदि। कहानी के बाद दिए गए 'बातचीत के लिए' प्रश्नों पर बच्चों से बातचीत कीजिए। यहाँ कोई उत्तर सही या गलत नहीं है, बल्कि प्रयास यह रहे कि बच्चे अपने मन की बात या उन्हें जो समझ में आया वह निःसंकोच कह सकें।

बातचीत के दौरान जो शब्द कहानी और बातचीत में बार-बार आ रहे हैं, उन शब्दों को बच्चों से बोर्ड पर लिखने के लिए कहिए, अन्य बच्चों को पढ़ने के लिए कहिए। कक्षा 2 में बच्चों से अपेक्षा है कि वे एक शब्द लिखने के साथ-साथ वाक्य पूरा करने से लेकर कुछ वाक्यों को अपने आप लिखना सीख जाएँगे। प्रत्येक इकाई में रिक्त स्थान की पूर्ति करने से लेकर प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखवाने तक का अभ्यास सम्मिलित है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

मिलकर पढ़िए

इस हिस्से में उन कहानियों का चुनाव किया गया है, जिनमें दोहराव है। दोहराव वाक्यों के स्तर पर है। कहानी के कथानक में भी दोहराव है। आपने यह देखा होगा कि दोहराव में बच्चों को आनंद आता है। दोहराव से बच्चों को अनुमान लगाने में भी सुविधा होती है। इन कहानियों को पढ़ने से पूर्व चित्र दिखाकर बच्चों से बातचीत कीजिए। फिर उँगली रखते हुए बच्चों के साथ मिलकर कहानी पढ़िए। जिन शब्दों का दोहराव है, उन्हें बोर्ड पर लिख दीजिए। उनके चित्र बन पाएँ तो अवश्य बनाइए। फिर, कहानी को पुन: पढ़िए और दूसरी बार पढ़ते समय दोहराव वाले वाक्यों पर बच्चों को अनुमान लगाने को कहिए। कुछ दिनों बाद, छोटे समूह में बच्चों को मिलकर पढ़ने के लिए कहिए। उनका अवलोकन कीजिए। उन्हें जहाँ-जहाँ सहायता की आवश्यकता है, उन शब्दों को नोट कर लीजिए। अगली कक्षा में इन शब्दों को आप 'शब्दों का खेल' में शामिल करके इन पर गतिविधियाँ करवा सकते हैं। इन सभी कार्यों का उद्देश्य यह है कि बच्चे दी गई पठन सामग्री को धीरे-धीरे पढ़ना सीख जाएँ। हमें याद रखना होगा कि हर बच्चे के सीखने का तरीका और गति अलग-अलग होती है। हम उन पर किसी भी प्रकार का दबाव बिल्कुल भी न डालें। हाँ, उन्हें सार्थक अवसर अवश्य प्रदान करें और उनका उत्साहवर्धन करें। इस पुस्तक में 'मिलकर पढ़ने' के कई अवसर हैं— ऐसा इसीलिए क्योंकि इन अवसरों से ही बच्चे पढ़ना सीखते हैं। आप भी पुस्तकालय से स्तर के अनुकूल पुस्तकें बच्चों को दें।

शब्दों का खेल

कक्षा 1 की तरह ही कक्षा 2 की इकाई 1 में ध्वनि और अक्षरों पर कार्य दिए गए हैं। यहाँ से आगे बढ़ते हुए उलट-पुलट कर दिए गए अक्षरों से सार्थक शब्द बनाना, शब्दों को सही क्रम में लिखकर वाक्य बनाना आदि की गतिविधियाँ दी गई हैं। दी गई कहानी को पूरा करना या चित्र के आधार पर कहानी या कुछ वाक्य लिखना बच्चों से अपेक्षित है। इसके लिए महत्वपूर्ण है कि उन्हें ऐसे अवसर बार-बार दिए जाएँ।

आनंदमयी कविता

बच्चे हाव-भाव के साथ, अभिनय करते हुए कविताओं को गाएँ, जैसा कि हम अपनी कक्षाओं में हमेशा से ही करते आ रहे हैं। कविताओं को चार्ट पेपर पर बड़े अक्षरों में लिख दें। फिर गाते समय बच्चे इन्हें देखकर, शब्दों पर उँगली रखकर भी गा सकते हैं। प्राथमिक स्तर पर कविताओं का आनंद लेना अति आवश्यक है। इसके सहारे ही कविता शिक्षण-अधिगम के रास्ते पर प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ा जा सकता है। उसके साथ-साथ कविताओं पर चर्चा करना, नई कविताएँ गढ़ना, कविताओं में आए शब्दों के साथ कार्य करना, कविता की पंक्तियों को आगे बढ़ाना आदि के अवसर भी दिए गए हैं।

चित्रकारी और लेखन

बच्चे चित्रों द्वारा स्वयं के विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। इन चित्रों में हमें बच्चों की अवलोकन क्षमता, विचार करने के कौशलों के कई प्रमाण मिलते हैं। इसी आशा से लिखना सीखने

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

की प्रक्रिया में चित्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। इसीलिए कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में ‘चित्रकारी और लेखन’ को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक गतिविधि संदर्भ आधारित है, उस पर कहानी या कविताएँ बच्चे पढ़ चुके हैं, बातचीत कर चुके हैं। उसके बाद उन्हें चित्रकारी और लेखन का कार्य दिया गया है। बच्चों से आप ऐसे भी किसी कविता या कहानी या अपने मन से चित्र बनाने के लिए कह सकते हैं। बच्चों को वाक्य लिखने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। प्रयास यह हो कि वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति करें। अपनी बातों को लिखने का प्रयास करें। बच्चों के छोटे समूह में भी ये गतिविधियाँ आप करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे से भी बहुत कुछ सीखते हैं।

खोजें-जानें

भाषा शिक्षण को बच्चों के संदर्भ से जोड़ने, संदर्भ से सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए इन गतिविधियों को शामिल किया गया है। इनसे बच्चों में अपने समुदाय की समझ बढ़ेगी। अपने घर और आस-पड़ोस का भी वे महत्व समझेंगे।

आओ कुछ बनाएँ

इन गतिविधियों का उद्देश्य है कि बच्चे ‘जटिल कार्य के लिए मौखिक निर्देशों को समझें और उसी कार्य के लिए दूसरों को स्पष्ट मौखिक निर्देश भी दे सकें।’ इस कार्य में कला और भाषा के एकीकरण का प्रयास किया गया है।

खेल-खेल में

यहाँ पर खेल गीत गाना, खेलना, अभिनय करना आदि सम्मिलित किए गए हैं। खेल-खेल में निर्भीक अभिव्यक्ति कर पाने के अवसर देने से बच्चों की झिझक समाप्त होती है। वे स्वयं के अनुभव को प्रसन्नता से सबके साथ साझा करने लगते हैं। शायद सीखने-सिखाने में यह सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है।

इस पुस्तक में कुछ अन्य रोचक गतिविधियाँ भी दी गई हैं, जैसे— ‘झटपट कहिए’, ‘आओ बूझें पहेली’ आदि। शिक्षक/शिक्षिकाएँ अपने स्तर पर भी इस प्रकार की कुछ और सामग्री खोजें, स्वयं तैयार करें और उपयोग में लाएँ। इन सब के साथ-साथ एक सतत चलने वाला आवश्यक कार्य यह है कि पाठ्यपुस्तक की प्रत्येक इकाई पर कार्य करते हुए शिक्षक/शिक्षिकाएँ स्वयं और बच्चों की सहायता से कुछ अधिगम-शिक्षण सामग्री (एल.टी.एम.) बनाते रहें और उन्हें कक्षा की दीवार पर लगाएँ या अन्य उपयुक्त तरीके से बच्चों के लिए उपलब्ध रखें और उनका उपयोग भी शिक्षण प्रक्रिया में करें। प्रत्येक इकाई में नई सामग्री की आवश्यकता होगी। उपलब्ध सामग्री में निश्चित रूप से कुछ पुस्तकें भी होनी चाहिए और नियमित रूप से बच्चे पुस्तकों के साथ काम करें, समय-सारिणी में इसकी जगह हो।

हमें पूरा विश्वास है कि हमारे शिक्षक/शिक्षिकाएँ इस पाठ्यपुस्तक की सामग्री का इसमें दिए उद्देश्यों और निर्देशों को ध्यान में रखते हुए रचनात्मक उपयोग करेंगे जिससे शिक्षण प्रभावी होगा और बच्चे आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

परामर्श

दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

मार्गदर्शन

शशिकला वंजारी, *पूर्व कुलपति*, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति
सुनीति सनवाल, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सदस्य समन्वयक, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति

सहयोग

कविता बिष्ट, *मुख्याध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, रा.शै.अ.प्र.प. परिसर, नई दिल्ली
चमन लाल गुप्त, *आचार्य* एवं *पूर्व अध्यक्ष*, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश
चोन्हास ओराव, *प्रभारी प्रधानाचार्य*, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, जुरिआ, लोहरदागा, झारखंड
नम्रता दत्त, *प्रधानाचार्य* (सेवानिवृत्त), *संकुल प्रमुख*, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश
नरेंद्र सिंह निहार, *पी.जी.टी* (हिंदी), राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सी ब्लॉक, संगम विहार, दिल्ली
निशा बुटोलिया, *सहायक आचार्य*, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु
नीलकंठ कुमार, *सहायक आचार्य* (हिंदी), सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
पटेल राकेश कुमार चंद्रकांत, *हेड टीचर*, नवा नदीसर प्राथमिक शाला, ब्लॉक गोधरा, पंचमहल, गुजरात
प्रिया यादव, *जूनियर प्रोजेक्ट फैलो*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
बिनय पटनायक, *शिक्षा विशेषज्ञ*, झारखंड
याचना गुप्ता, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
यासमीन अशरफ, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
रमेश कुमार, *सह आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
विजय कुमार चावला, *पी.जी.टी.* (हिंदी), रा.मा.स.व.मा. विद्यालय, ग्योंग, जिला कैथल, हरियाणा
विनोद 'प्रसून', *हिंदी विभागाध्यक्ष*, दिल्ली पब्लिक स्कूल, ग्रेटर नोएडा

© NCERT not to be republished

सुमन कुमार सिंह, *मुख्य अध्यापक*, उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, कौड़िया बसंती, भगवानपुर हाट, सिवान, बिहार
सैयद मतीन अहमद, *आचार्य*, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना

समीक्षा समिति

के.वी. श्रीदेवी, *सहायक आचार्य*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
गजानन लोंढे, *कार्यकारी निदेशक*, संवित रिसर्च फाउंडेशन, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु
ज्योत्स्ना तिवारी, *अध्यक्ष* एवं *आचार्य*, जेंडर अध्ययन विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
भरतभाई धोकई, *निदेशक*, कच्छ कल्याण संघ, समर्थ भारत, कच्छ, गुजरात
भारती कौशिक, *सह आचार्य*, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
मंजुल भार्गव, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति एवं *अध्यक्ष*, मैंडेट ग्रुप
रंजना अरोड़ा, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
शशिकला वंजारी, *पूर्व कुलपति*, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति
सी.वी. शिमरे, *आचार्य*, गणित एवं विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सुनीति सनवाल, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य समन्वयक

नीलकंठ कुमार, *सहायक आचार्य* (हिंदी), सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
उषा शर्मा, *आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, के. कस्तूरीरंगन, *अध्यक्ष*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति व समिति के सभी सदस्यों; मंजुल भार्गव, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समित और *अध्यक्ष*, मैंडेट ग्रुप व इस समूह के सभी सदस्यों; दिव्यांशु दवे, सेंटर फॉर इनर एक्सीलेंस के *संस्थापक निदेशक*, *पूर्व महानिदेशक* और *कुलपति* (प्रभारी) बाल विश्वविद्यालय, गांधी नगर, गुजरात के तथा श्रीधर श्रीवास्तव, *संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रति इस पुस्तक की समीक्षा में बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है। परिषद् अमरेन्द्र प्रसाद बेहेरा, *संयुक्त निदेशक*, सी.आई.ई.टी. रा.शै.अ.प्र.प. के प्रति भी आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने हर स्तर पर पाठ्यपुस्तक निर्माण की प्रक्रिया को गति प्रदान की।

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए परिषद सभी रचनाकारों व परिजनों एवं प्रकाशकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए शशि सबलोक (नीमा की दादी, तालाब), दिविक रमेश (घर), प्रकाशक, तूलिका प्रकाशन, चेन्नई (ऐनी बेसंट द्वारा रचित माला की चाँदी की पायल, *काम* पुस्तक से 'नर्तक' एवं 'माली', *श्यामपट्ट* पुस्तक से 'फूल'), अनुभव राज (माँ), गीता धर्मराजन (थाथू और मैं, कथा प्रकाशन), प्रकाशक, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल (चींटा, पोषम पा भई पोषम पा), नरेश सक्सेना (टिल्लू जी), दिवाकर भार्गव (नटखट दिवाकर), इंदु हरिकुमार (तीन दोस्त), देविका रंगाचारी (दुनिया रंग-बिरंगी), बालस्वरूप राही (कौन), समीरा जिया कुरेशी (बैंगनी जोजो), दीपा बालसावर (बीज), सत्यनारायण लाल (किसान), प्रकाशक, भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (स्नेहलता शुक्ला द्वारा 'मूली' रचना के लिए), प्रकाशक, इकतारा (बरसात और मेंढक, जगदीश जोशी द्वारा रचित शेर और चूहे की दोस्ती), आकांक्षा द्विवेदी (सोहनलाल द्विवेदी जी की रचना 'उठो उठो!' के लिए), मीरा भार्गव (खेल सन्ध्या), श्याम सुशील, दिल्ली (हाथी साइकिल चला रहा था), आस्तिक सिन्हा (डरो मत), एस.सी.ई.आर.टी., उत्तर प्रदेश (चार दिशाएँ), आकिको हायाशी (मूल रचनाकार) एवं मंजुला माथुर (हिंदी अनुवाद — चंदा मामा, सीबीटी प्रकाशन), राजेश जोशी (गिरे ताल में चंदा मामा), मोहम्मद साजिद खान (चाँद की रोटी), मनोज कुमार (सबसे बड़ा छाता) एवं प्रकाशक: रूम टू रीड इंडिया ट्रस्ट, आनंदवर्धन शर्मा (श्रीप्रसाद जी की रचनाएँ 'बात ज़रा-सी', 'टिक-टिक', 'काली-भूरी', 'देखो ऊपर उड़ा जा रहा', 'बादल'), प्रकाशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली (फिर फुर्र!) एवं बच्चों की सुरक्षा से संबंधित सामग्री के लिए अर्पण के प्रति परिषद आभारी है।

पुस्तकों के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए साकेत, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; ऋचा प्रसाद, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; तरुण कुमार नोंगिया, *ग्राफ़िक डिज़ाइनर* (संविदा), राष्ट्रीय

© NCERT not to be republished

साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; मोहम्मद आतिर, *ग्राफ़िक डिज़ाइनर* (संविदा), राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; दिनेश वशिष्ट, संपादक (संविदा) और मोहन, *सहायक संपादक* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; प्रियंका, *डी.टी.पी ऑपरेटर* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; गिरीश, *डी.टी.पी ऑपरेटर* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; आयाज़, *डी.टी.पी ऑपरेटर* (संविदा), राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ; उपासना, *डी.टी.पी ऑपरेटर* (संविदा), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; पूजा साहा, *अर्द्ध पेशेवर सहायक (एस. पी.ए.)*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सपना, *टाइपिस्ट* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; जितेंद्र कुमार, *टाइपिस्ट* (संविदा), राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; चंचल, *टाइपिस्ट* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; अभिनव प्रकाश, *एस.आर.ए.* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; ज्योति तिवारी, *जे.पी.एफ.* (संविदा), राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; के प्रति परिषद् आभारी है।

परिषद् विशेष रूप से जीवंत और रचनात्मकता को बढ़ावा देने वाले चित्रांकन के लिए पद्मश्री दुर्गा बाई, *लोकचित्रकार* (गोंड शैली, मध्य प्रदेश) तथा ग्रीन टी डिज़ाइनिंग स्टूडियो प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली का आभार प्रकट करती है जिनके अथक परिश्रम से यह पुस्तक इस रूप में आ सकी है।

इस पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप देने के लिए परिषद् प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. तथा इस पुस्तक के संपादन के लिए कहकशा, *सहायक संपादक* (संविदा), पवन कुमार बरियार, *इंचार्ज*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ एवं उपासना और नरेश कुमार *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रयासों की सराहना करती है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

कहाँ क्या है?

आमुख *iii*

पाठ्यपुस्तक के बारे में *vii*

इकाई 1: परिवार

1.	नीमा की दादी	2
2.	घर	7
3.	माला की चाँदी की पायल	9
4.	माँ	14
5.	थाथू और मैं	16
6.	चींटा	20
7.	टिल्लू जी	23
*	नटखट दिवाकर	25

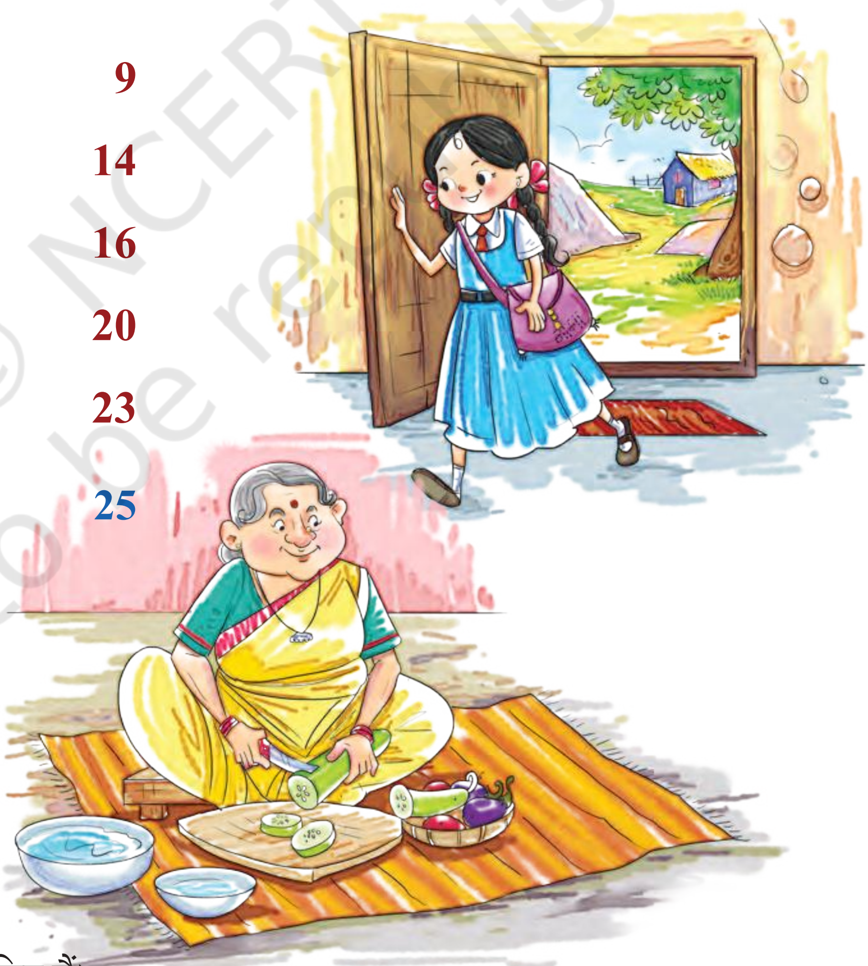

* तारांकित पाठ केवल पढ़ने के लिए हैं।

© NCERT not to be republished

इकाई 2: रंग ही रंग

8.	तीन दोस्त	27
9.	दुनिया रंग-बिरंगी	34
10.	कौन	36
11.	बैंगनी जोजो	40
12.	तोसिया का सपना	46

इकाई 3: हरी-भरी धरती

13.	तालाब	54
14.	बीज	60
15	किसान	62
16.	मूली	67
17.	बरसात और मेंढक	70
*	उठो उठो	75

Reprint 2025-26

इकाई 4: मित्रता

18.	शेर और चूहे की दोस्ती	77
19.	आउट	87
*	खेल सन्ध्या	93
20.	छुपन-छुपाई	96
21.	हाथी साइकिल चला रहा था	103
*	डरो मत!	106

इकाई 5: आकाश

22.	चार दिशाएँ	109
23	चंदा मामा	111
24.	गिरे ताल में चंदा मामा	114
25.	सबसे बड़ा छाता	116
26.	बादल	122
*	फिर फुर्र!	130

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26